|  |  |  |
| --- | --- | --- |
| 21. April 2024 | | |
| **4. Sonntag der Osterzeit B Weltgebetstag für geistliche Berufe** | | |
| Erste Lesung: Apg 4,8-12; Zweite Lesung: 1 Joh 3,1-2; Evangelium: Joh 10,11-18 | | |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 144, 1-3+6 | Nun jauchzt dem Herren |
|  | GL 332, 1+2+5+6 | Die ganze Welt |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 156 | Kyrie |
|  | GL 163, 7 | Herr Jesus, du rufst |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 758 | Lobsing, erlöste Christenschar |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Ps 118, 1 u. 4.8-9.21-23 u. 26.28-29 | |
|  | Kehrverse: |  |
|  | GL 558 | Danket dem Herrn |
|  | GL 644, 3 | Auferstanden ist der Herr |
|  | oder Lied: |  |
|  | GL 324, 1-4 | Vom Tode heut erstanden ist |
|  |  |  |
| Halleluja: | GL 175, 2 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *So spricht der Herr:* |  |
|  | *Ich bin der gute Hirt.* |  |
|  | *Ich kenne die Meinen und die Meinen kennen mich.* | |
|  |  |  |
| Credo: | GL 802 | Den Taufbund |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 366, 1-3 | Jesus Christus, guter Hirte |
|  | GL 477, 1+3 | Gott ruft sein Volk zusammen |
|  | GL 281, 3 | Ich bin euer Weg geworden |
|  | GL 421, 1+2 | Mein Hirt ist Gott der Herr |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 198 | Heilig |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 803, 1+6 | Christen, singt |
|  | GL 808, 8 | Guter Hirt, du wahre Speise |
|  | GL 755, 3 | Herr, du lässt uns nicht vergebens |
|  |  |  |
| Danksagung: | GL 752, 3! | Dir danken nun, Herr Jesus Christ |
|  | GL 772, 1+5! | Gelobt sei Jesus Christus |
|  | GL 455, 1+3! | Alles meinem Gott zu Ehren |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 487, 4+5 | Du guter Hirt, Herr Jesu Christ |